BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

‘जनजातीय गौरव दिवस’ एवं ‘धरती आबा’ भगवान बिरसा मुंडा जी की 151वीं जयंती



‘जनजातीय गौरव दिवस’ के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई । ‘धरती आबा’ भगवान बिरसा मुंडा जी की 151वीं जयंती के पावन अवसर पर मैं उन्हें शत्-शत् नमन करता हूँ। भगवान बिरसा मुंडा जी का जीवन अदम्य साहस, त्याग, स्वाभिमान और अन्याय के विरुद्ध अटूट संघर्ष का प्रेरणास्रोत है । जनजातीय समाज के अधिकारों, अस्मिता, संस्कृति और सम्मान की रक्षा के लिए उन्होंने जिस दृढ़ संकल्प, अदम्य इच्छाशक्ति और नेतृत्व का परिचय दिया, वह भारतीय इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा। उनका संघर्ष स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय गरिमा के व्यापक मूल्यों का प्रतीक है।

जनजातीय गौरव दिवस हमें जनजातीय समाज के गौरवशाली इतिहास और उसके संघर्षों के साथ-साथ उन चुनौतियों का भी स्मरण कराता है, जिनका सामना यह समाज लंबे समय से करता आया है। देश के अनेक जनजातीय अंचलों में कुपोषण, पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुँच तथा आधारभूत संपर्क सुविधाओं की कमी जैसी समस्याएँ आज भी चिंता का विषय हैं। इन चुनौतियों का समाधान सुनिश्चित करना हम सभी का सामूहिक दायित्व है, ताकि जनजातीय समाज को शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्मान और विकास के समान अवसर प्राप्त हों तथा राष्ट्र की प्रगति में उसकी सक्रिय एवं सार्थक भागीदारी सुनिश्चित हो सके। भगवान बिरसा मुंडा जी का जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी सांस्कृतिक विविधता, समृद्ध परंपराओं और समाज के प्रत्येक वर्ग के सम्मान, सहभागिता एवं सशक्तीकरण में निहित है। हमारा यह दायित्व है कि हम जनजातीय विरासत एवं सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण, सामाजिक समरसता, समान अवसरों की उपलब्धता और समावेशी राष्ट्र निर्माण के संकल्प को आत्मसात करें तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर समर्पण एवं प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ते रहें।

‘धरती आबा’ भगवान बिरसा मुंडा जी के आदर्श, उनका त्याग और उनका अमर योगदान आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्रसेवा, स्वाभिमान, न्याय एवं सामाजिक उत्थान के मार्ग पर चलने के लिए सदैव प्रेरित करते रहेंगे। इन लक्ष्यों की प्राप्ति में विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय केवल ज्ञान के प्रसार और अकादमिक उत्कृष्टता के केंद्र ही नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन एवं राष्ट्र निर्माण के सशक्त माध्यम भी हैं। हमारा दायित्व है कि हम जनजातीय समाज की शैक्षिक उन्नति, कौशल विकास और अनुसंधान के अवसरों का विस्तार करें तथा उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक ज्ञान एवं लोक परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए सतत प्रयत्नशील रहें साथ ही जनजातीय समाज के प्रतिभासम्पन्न युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नवाचार और उद्यमिता से जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर एवं सशक्त बनाने की दिशा में निरंतर कार्य करें। हमारा प्रयास है कि हम उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के समान अवसर उपलब्ध कराते हुए उनकी प्रतिभा एवं क्षमताओं को उचित मंच प्रदान करें। मेरा विश्वास है कि विश्वविद्यालयों के ऐसे सामूहिक एवं प्रतिबद्ध प्रयास जनजातीय समाज के सशक्तीकरण के साथ-साथ एक समावेशी, आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान देंगे।

भगवान बिरसा मुंडा जी की जयंती पर उन्हें शत्-शत् नमन ।

- आचार्य राज कुमार मित्तल

कुलपति

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ